ध्येय IAS®

most trusted since 2003

Updated 2019

इतिहास

(सामान्य अध्ययन)

भारतीय संस्कृति एवं विरासत

(स्थापत्य कला - III)

द्वारा

विजय वेद सर

FACE TO FACE CENTRES

MUKHERJEE NAGAR (Head Office) :	A-12/13 ANSAL BUILDING, DR. MUKHERJEE NAGAR, DELHI - 110009, 9205274741/ 42/ 43/ 44
RAJENDRA NAGAR :	25B, SECOND FLOOR, PUSA ROAD NEW DELHI - 9205274743, 9205274745
LAKSHMI NAGAR :	1/53, 3RD FLOOR, LALITA PARK, LAXMI NAGAR, DELHI-92, 011-43012556, (+91)- 9311969232
RESIDENTIAL ACADEMY :	28/1A, KNOWLEDGE PARK III, GREATER NOIDA, UTTAR PRADESH - 201306, PHONE: 092053 36037/38/39
PRAYAGRAJ :	IIND & IIIRD FLOOR, SHRI RAM TOWER, 17C, SARDAR PATEL MARG, CIVIL LINES, ALLAHABAD PH.: 0532-2260189, 08853467068
LUCKNOW- ALIGANJ CENTRE :	A-12, SECTOR-J, ALIGANJ, LUCKNOW PH.: 0522-4025825, 09506256789
LUCKNOW- GOMTI NAGAR CENTRE:	CP-1, JEEWAN SHOPING COMPLEX, VIRAM KHAND-5, NEAR HUSARIYA CHAURAHA, GOMTI NAGAR, LUCKNOW -227106 PHONE: +91 7234000501, 7234000502
BHUBANESWAR :	OEU TOWER, THIRD FLOOR, KIIT ROAD, PATIA, BHUBANESWAR, ODISHA 751024, PH.: +91 9818244644, 7656949029

LIVE STREAMING CENTRES

Ahmedabad	9879113469/8000162499	Jodhpur	9529989199/9928965998
Aligarh	9837877879	Jalandhar	9888777887
Azamgarh	7617077051	Kanpur	7275613962
Bahraich	7275758422	Kurukshetra	8950728524
Bareilly	9917500098	Lucknow Alambagh	7518373333
Chandhigarh	8146199399/9050888338	Ludhiana	9876218943/9888178344
Faridabad	9711394350	Moradabad	9927622221
Gorakhpur	7080847474	Patiala	9041030070
Gwalior	9893481642	Patna	9334100961
Haldwani	8077728957/7060172525	Rewa	9926207755
Hisar	9996887708	Varanasi	7408098888
Jabalpur	8982082023		

→ मध्यकालीन स्थापत्य कला / वास्तुकला

- दिल्ली सल्तनत के स्थापत्य (1206 - 1526)
- क्षेत्रीय स्थापत्य
- मुगल वंश स्थापत्य (1526 - 1707)

तुर्क
↓
खिलजी
↓
तुगलक
↓
सैयद
↓
लोदी

मस्जिद मकबरा
मीनार, गुम्बद
कुरान की आयतों की सजावट, पत्थर की जालियां
"इण्डो-इस्लामिक"

• तुर्कों द्वारा स्थापित स्थापत्य के नवीन रूप रंग

दिल्ली सल्तनत की स्थापना के बाद संस्कृति में अनेक बदलाव हुए। स्थापत्य कला में भी अनेक नवीन रूपों का आगमन हुआ। तुर्कों द्वारा मेहराब गुम्बद मस्जिदों मकबरों किलों आदि का निर्माण कराया गया। प्राचीन भारत में इन इमारतों का निर्माण नहीं किया जाता था।

इमारतों की जुड़ाई के लिए तुर्कों द्वारा सुर्खी एवं चुना का इस्तेमाल किया गया। गवनों को सजाने के लिए कुरान की आयतों पत्थर की जालियों रंगीन टाइल्स ज्यामितिय अलंकरणों आदि का प्रयोग किया गया।

ध्येय IAS
most trusted since 2003

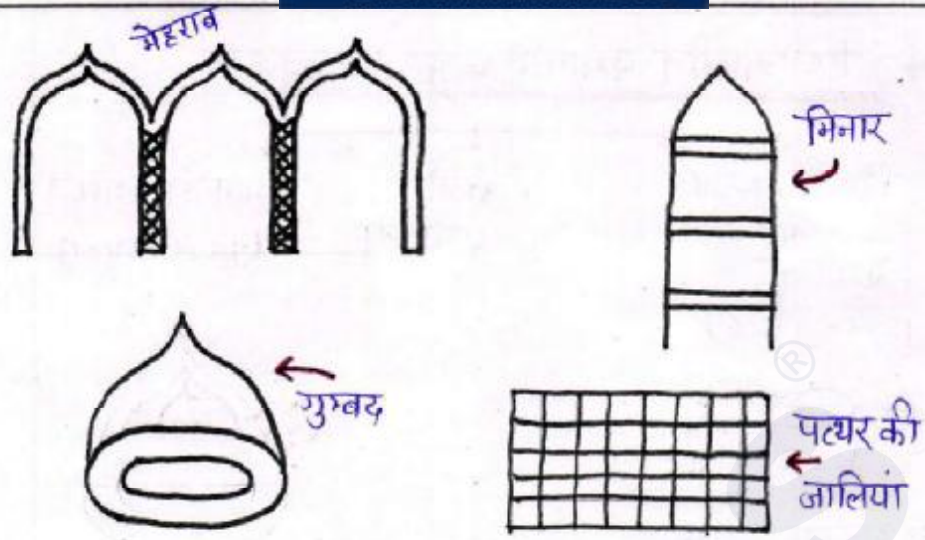

वास्तुकला में तकनीकी परिवर्तन

दिल्ली सल्तनत के तहत अनेक भवनों एवं इमारतों का निर्माण हुआ इनका निर्माण अधिकांशतः नवीन जरूरतों के अनुरूप किया गया था। अतः स्थापत्य कला मे नवीन परिवर्तन हुए जो निम्न हैं।

1. स्थापत्य के नए प्रकारों /रूपों जैसे - मास्जिद मकबरा मिनार गुम्बद मेहराब आदि का निर्माण।

2. छत डालने की प्रणाली मे बदलाव आया। प्राचीन भारत मे छत डालने के लिए बीम एवं शहतीर प्रणाली का प्रयोग किया जाता था। तुर्कों ने गुम्बद एवं मेहराब आधारित त्रिज्याकार छत प्रणाली का प्रयोग किया यद्यपि प्राचीन हिंदू प्रणाली को बने रहने दिया गया लेकिन मुख्य बल मेहराबों एवं गुम्बदों के निर्माण पर था।

3. भवनो को सजाने के लिए नए तौर तरिकों - पत्थर की सुन्दर जालियां कुरान की आयतें रंगीन टाइल्स ज्यामीतिय अलंकरण फूल पत्ती बेलबूटे आदि का प्रयोग किया गया।

4. जुड़ाई के लिए सुर्खी एवं चुने का इस्तेमाल -

› इण्डोइस्लामिक स्थापत्य

दिल्ली के सुल्तानो द्वारा अनेक भवन एवं इमारतें बनवायी गयी। जो आगे मुगलों तक जारी रहे। इनमें मस्जिद मकबरा मिनार गुम्बद किले आदि मुख्य थे। इन भवनों के निर्माण में गुम्बद एवं मेहराव आधारित इस्लामिक परम्परा की छत प्रणाली तथा हिन्दू परम्परा की छत ढालने की शहतीर एवं बीम प्रणाली दोनो का समन्वय करते हुए भवनो का निर्माण किया गया। सजावट के लिए मुस्लिम तौर तरिको के साथ-साथ प्राचीन हिन्दू प्रतीकों (कमल पुष्प) का भी प्रयोग किया गया। हिन्दू-मुस्लिम दोनों परम्पराओं के संबन्ध से बने होने के कारण इसे इण्डो-इस्लामिक स्थापत्य कहा जाता है।

› सल्तनत कालीन स्थापत्य के विकास का चरण

दिल्ली सल्तनत के तहत कई मुस्लिम वंश सत्ता पर आसीन हुए इन सभी के तहत अनेक इमारतों एवं स्थापत्य संरचनाओं का निर्माण कराया गया जिसे विभिन्न चरणों में बांटकर देखा जा सकता है।

प्रथम चरण (तुर्क या गुलाम काल)

यह स्थापत्य निर्माण का प्रारम्भिक चरण था इसमें वास्तविक मेहराबों एवं वैज्ञानिक गुम्बदों का ठीक से निर्माण नही हो पाया। इस काल के भवनो पर हिन्दू प्रभाव अधिक तथा मुस्लिम प्रभाव कम है।

इसे प्रयोगों का चरण कहा जाता है। क्योंकि अनेकहिंदू भवनों की कुछ मुस्लिम विशेषताओं को जोड़कर भवन बनाए गए। स्वतंत्र संरचनाओं का निर्माण कम हुआ इस चरण की प्रमुख इमारतों में कुतुबमीनार कुव्वत उलइस्लाम मस्जिद, ढाई दिन का झोपड़ा नसरूद्दीन एवं बलबन का मकबरा आदि मुख्य हैं।

द्वितीय चरण (खिलजी काल)

खिलजियों के काल में बेहतर संरचनाओं का निर्माण हुआ। इस काल में वैज्ञानिक गुम्बद तथा वास्तविक मेहराब बनने लगे। यहां से मुस्लिम प्रभाव अधिक होने लगा प्रमुख - अलाई दरवाजा, हौज-ए-खास सीरी की इमारतें आदि मुख्य हैं।

तृतीय चरण (तुगलक)

इस काल में बड़े-2 एवं भव्य किलों के निर्माण पर विशेष बल दिया गया। तुगलक कालीन बने इमारतों में मिनारों का अभाव है। भवनों में ढलवा दिवारों तथा खुरदरे पत्थरों का अधिक प्रयोग किया गया है जिससे ये काफी मजबूत दिखाई देते हैं। तुगलक कालीन प्रमुख इमारतों में - गयासुद्दीन का मकबरा, बारह खम्भा भवन खान-ए-जहां, तेलंगानी का मकबरा आदि मुख्य है।

चतुर्थ चरण (लोदी)

लोदियों के काल में अनेक खूबसूरत एवं मकबरों एवं मस्जिदों का निर्माण किया गया अमीरों द्वारा अनेक पंचभूजीयों मकबरों एवं सुल्तानों द्वारा अष्टभूजीय मकबरों का निर्माण कराया गया। इस काल में ही सर्वप्रथम

दोहरे गुम्बद का प्रयोग किया गया। प्रमुख इमारतें - सिकन्दर लोदी का मकबरा, बड़े खा एवं छोटे खां की समाधि (सभी लोदी गार्डेन दिल्ली) आदि मुख्य है। इस काल तक आते-आते दिल्ली सल्तनत की इमारतों मे एक विशेष परिपक्वता दिखाई देने लगती है।

▸ मध्यकालीन क्षेत्रीय स्थापत्य कला

मुहम्मद बिन तुगलक के काल में दिल्ली सल्तनत से अलग होकर अनेक क्षेत्रीय राजवंशों का उदय हुआ। क्षेत्रीय शासकों द्वारा भी अनेक भवन एवं स्थापत्य बनवाए गए जिसे क्षेत्रीय स्थापत्य कला के नाम से जाना जाता है।

जौनपुर शैली

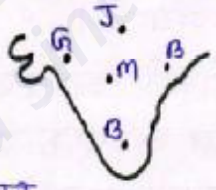

जौनपुर में शर्की वंश के अधीन अनेक इमारतें बनवाई गयी इसमे जामा-मस्जिद एवं अटाला मस्जिद मुख्य इमारते है।

- जौनपुर के भवनों में सशक्त तथा विशाल दरवाजों का प्रयोग किया गया तथा इसे काफी भव्य रूप दिया गया तुगलकों की भाँति यहां ढलवा दिवारों का प्रयोग है।
- यहा के भवनों में मीनारों का अभाव है भवनो मे धरण (Arcuate) एवं छज्जा का प्रयोग किया गया है जो स्थानीय हिंदू प्रभाव है।

गुजरात शैली

गुजरात के स्थानीय शासको द्वारा अनेक मस्जिदों का निर्माण कराया गया किले बनवाये गये। इसमें अहमदाबाद का मस्जिद एवं चम्पानेर का जामा मस्जिद प्रमुख इमारते है।

- गुजरात के इमारतों पर हिंदू एवं जैन परम्परा का प्रभाव है यहां के मस्जिदो में मंदिरो की भाँति बहु संख्यक स्तंभो का प्रयोग किया गया है। सामग्री के रूप में चूना पत्थर का अधिकतम प्रयोग है।
- भवनो की सजावट के लिए पत्थर की बारीक एवं नक्काशीपूर्ण सुन्दर जालियों का इस्तेमाल किया गया है।

बंगाल शैली बंगाल मे क्षेत्रीय हुसैनी शासकों के द्वारा अनेक संरचनाओं का निर्माण कराया गया जिसमे अदीना मस्जिद तथा पाड़ुवा की मस्जिद मुख्य है। बंगाल की इमारतों में काले पत्थर तथा ईटों का प्रयोग किया गया है।

- भवनो को ठोस एवं सुडौल रूप दिया गया है तथा गुम्बदो की एक पूरी श्रृखला बनायी गयी है। छतो का निर्माण मौसम को ध्यान मे रखते हुए किया गया है ताकि भारी बारिस से अधिकतम नुकसान से बचा जा सके।

मालवा शैली स्थानीय शासको द्वारा कई इमारते बनवाई गयी इसमे जामा मास्जिद (माण्डू) तथा मालवा का किला महत्वपूर्ण है।

- मालवा के भवन तुगलक शैली मे बने है यहाँ काफी उच्चे गुम्बदों का प्रयोग किया गया है। यहां के भवनो मे जौनपुर की भाँति मिनारों का अभाव है। नक्काशी के लिए यहां भी पत्थर की सुन्दर जालियो का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न संख्या
Question No.

ध्येय IAS
most trusted since 2003

इस भाग में कुछ न लिखें
(Dont write anything in this margin)

दक्षिणी क्षेत्रीय राज्य

मध्यकाल में दकन एवं दक्षिण भारत में अनेक क्षेत्रीय राज्यो की स्थापना हुई। बहमनी एवं बीजापुर के सुल्तानों द्वारा अनेक इमारतों का निर्माण कराया गया इसमें चारमिनार (हैदराबाद) तथा बीजापुर का गोल गुम्बज काफी भव्य संरचनाए हैं।

Q. दिल्ली सल्तनत के तहत वास्तुकला मे हुए तकनीकी परिवर्तन की विवेचना कीजिए।

Q. तुर्क शासकों ने स्थापत्य कला के तहत किन नवीन रूपों तत्वों का समावेश किया?

Q. इण्डो इस्लामिक स्थापत्य कला से आप क्या समझते हैं? इसकी प्रमुख विशेषताओं का निरूपण कीजिए।

Q. सल्तनत कालीन वास्तुकला के विकास को दर्शाइए।

Q. मध्यकालीन क्षेत्रीय राज्यों के अधीन विकसित हुए क्षेत्रीय स्थापत्य कलाओं पर प्रकाश डालिए।

दिल्ली सल्तनत : तकनीकी परिवर्तन

तुर्क - अनेक नवीन तकनीकों का भारत मे आगमन

- चरखा
- रहट मे गियर (लोरिया/साकिया/अरघट्ट)
- रेशम पालन (पूर्व मे नही था)
- कागज
- कम्पास
- जीन + रकाब
- स्थापत्य सुर्खी + चुना
  मेहराब, गुम्बद, मीनार पत्थर की जालियां etc

मुगलकालीन स्थापत्य कला (1526 - 1707)

मुगलकालीन स्थापत्य कला की विशेषताएं

मुगल शासक एवं स्थापत्य कला का सर्वेक्षण

बाबर हुमायु अकबर नहाँगीर शाहजहाँ औरंगजेब

बाबर से लेकर औरंगजेब तक मुगल शासकों ने अनेक विशाल एवं भव्य तथा खूबसूरत स्थापत्य संरचनाओं का निर्माण कराया जो आज भी आगरा फतेहपुर सिकरी दिल्ली आदि स्थानों पर जीवंत बने हुए है।

विशेषताएं :-

1. मुगल इमारतो का निर्माण योजना वद्ध तरीके से किया गया है कौन सी इमारत कहां होनी चाहिए ? निर्मित तथा खाली स्थानों के बीच किस प्रकार का सन्तुलन होना चाहिए इस सब बातों को ध्यान मे रखते हुए इमारतो का निर्माण किया गया है।
2. मुगल भवनो का निर्माण चुना सुर्खी गार ईट पत्थर तथा कंकरीट आदि सामाग्रियों आदि से किया गया है।
3. छत डालने की मुस्लिम परम्परा (त्रिज्याकार छत प्रणाली- मेहराब - गुम्बद) एवं हिन्दू परम्परा (सपाट छत प्रणाली शहतीर एवं बीम) का अद्भुत संगम मुगलिया भवनों मे दिखाई देता है।

4. मुगल इमारतों में मेहराबों गुम्बदों एवं मिनारों के निर्माण में शिल्पियों ने उच्च स्तरीय तकनीकी एवं कला कौशल का प्रदर्शन किया है। मुगल गुम्बद काफी भव्य एवं खूबसूरत है जो कक्षाकार आकृति में विशेष उभार लिए हुए है। इसी प्रकार मुगल मेहराब कोणदार एवं घुमावदार आकृति में रंगीन टाइल्सों का प्रयोग करते हुए अत्यंत खूबसूरत ढंग से बने है।

5. मुगल भवनों में विशालता एवं भव्यता के साथ-साथ अलंकरण एवं सौंदर्य पर भी विशेष बल दिया गया है अलंकरण एवं सजावट के लिए रंगीन टाइल्सों के साथ साथ पिट्राड्यूरा (भवनों को कीमती पत्थरों, रत्नों आदि से सजाना) का प्रयोग किया गया है भवनों के साथ खाली स्थानों को चारबाग शैली से सजाया गया है। इसके तहत खूबसूरत फूल पत्तियों फव्वारों उद्यानों का निर्माण किया गया है। इसे हुमायूं का मकबरा, ताजमहल, लालकिला आदि में देखा जा सकता है।

मुगल इमारतों / वास्तुकला का सर्वेक्षण

बाबर- बाबर ने काफी कम समय भारत में शासन किया फिर भी उसके द्वारा कई इमारतों का निर्माण करवाया गया जैसे पानीपत का काबुली बाग मस्जिद, आगरा एवं संभल की मस्जिद, भवनों को सजाने के लिए चारबाग शैली को सर्वप्रथम बाबर ही भारत लाया।

हुमायूं- फतेहाबाद की मस्जिद (हरियाणा) एवं दीन पनाह पुस्तकालय।

अकबर- अकबर का काल स्थायित्व एवं विकास का काल था उसने काफी बड़े क्षेत्र तक मुगल सत्ता का विस्तार किया राजकीय आय बढ़ाने के लिए अनेक राजाब सुधार किए कला व स्थापत्य में वह विशेष रूची रखता था उसने सुलह-ए-कुल की नीति के तहत सभी परम्पराओं एवं संस्कृतियों को आगे बढ़ाया। अतः उसके काल में भारी संख्या में इमारतों का निर्माण हुआ।

अकबर कालीन इमारते मुख्य रूप से चार केंद्रों आगरा फतेहपुर सिकरी लाहौर इलाहाबाद में बनवाई गयी इसमे अन्तिम दो स्थानों की इमारतें नष्ट प्राय हो गयी है लेकिन बाकी इमारते अभी भी जीवित है।

आगरा की इमारतें

a. आगरा का किला - दो दरवाजा → दिल्ली दरवाजा
अमर सिंह → जयमल फत्ता

b. जहांगिरी महल एवं अकबरी महल
(दोनो किले के भीतर)

फतेहपुर सिकरी की इमारतें

धार्मिक इमारतें / भवन

1. जामा मस्जिद
2. शेख सलीम चिश्ती का मकबरा
(एक मात्र इमारत जो पूर्णतः संगमरमर से बना है)

गैर धार्मिक इमारतें / भवन

1. दिवान-ए-आम
2. दिवान-ए-खास
3. पंचमहल (हिंदू & बौद्ध प्रभाव)
4. जोधाबाई का महल
5. बुलंद दरवाजा
6. चौगान खेल का मैदान
7. अनूप तालाब

अकबर कालीन वास्तुकला की विशेषताएं

1. अकबर कालीन इमारतें निश्चित योजना के साथ बनायी गयी है। साहित्य में चर्चा मिलती है कि वह वास्तुकारों के साथ भवन निर्माण के पहले घण्टो राय-मशवरा करता था एवं योजना बनाता था।

2. अकबर कालीन इमारतों का रूप काफी भव्य एवं मर्दाना प्रकार का है। उसके समय काफी विशाल संरचनाओं का निर्माण किया गया जिसे आगरा एवं फतेहपुर सिकरी में देखा जा सकता है।

3. अकबर कालीन भवनों में लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग बहुतायत मात्रा में किया गया है संगमरमर का प्रयोग काफी कम है।

4. मुख्य इमारतों तथा खाली स्थानों के बीच समन्वय किया गया है खाली स्थानों में सौंदर्यीकरण पर बल दिया गया है इसके तहत चार बाग शैली में फूल-पत्ती, फव्वारों, तलाब आदि का निर्माण किया गया है।

5. भवनों में दोहरे गुम्बदों का प्रयोग किया गया है जो कंदाकार आकृति में काफी भव्य सुडौल एवं सुन्दर है। (हुमायु का मकबरा) मेहराब भी काफी अलंकृत बने है।

6. इमारतों में अनेक परम्पराओं (हिन्दू बौद्ध मुस्लिम आदि) का प्रभाव है। गुम्बद मेहराव शहतीर बीम का सुन्दर समन्वय है। पंचमहल पर बौद्ध एवं जोधाबाई महल पर हिन्दू प्रभाव आसानी से देखा जा सकता है।

जहांगीर - जहाँगीर का काल मुख्यत: चित्रकला के विकास से जुड़ा था फिर भी इस समय कई महत्वपूर्ण संरचनाएँ बनी। जैसे -

1. अकबर का मकबरा (सिकन्दरा आगरा)
2. एतमाउद्दौला का मकबरा - निर्माण नूरजहां के द्वारा किया गया।
   - आगरा मे स्थित;
   पिट्राड्यूरा का सर्वप्रथम प्रयोग
3. अब्दुल रहीम खानखाना का मकबरा
4. जहांगीर के समय अनेक बाग बगीचो का निर्माण किया गया।
   - शालीमार बाग (जम्मू कश्मीर)
   - निशाद बाग (J&K)
   - दिलकश बाग (लाहौर)

शाहजहाँ - शाहजहां के काल में सभी मुगलो से अधिक संख्या में अत्यंत भव्य एवं खुबसूरत इमारतों का निर्माण किया गया। उसके पहले एवं उसके बाद कभी भी ऐसी भव्य इमारते नही बन पाई। इसीलिए शाहजहां के काल को मुगल काल का स्वर्णकाल कहा जाता है। शाहजहा कालीन इमारते मुख्यत: आगरा एवं दिल्ली में संकेंद्रीत है -

आगरा		दिल्ली	
• दिवान-ए-आम	सभी आगरा किले के भीतर	• लाल किला	सभी लाल किले के भीतर
• दिवान-ए-खास		• दिवान-ए-आम	
• मोती मस्जिद		• दिवान-ए-खास	
• नगीना मस्जिद		• रंगमहल	
• मुसम्मन बुर्ज		• शीश महल	
• ताजमहल (किले के सामने यमुना के तट पर)		• जामा मस्जिद (लाल किले के सामने)	

शाहजहां कालीन स्थापत्य की मुख्य विशेषताएं

1. इमारतो का निर्माण निश्चित योजना के साथ किया जाता था खाली एवं निर्मित स्थानो के मध्य संतुलन किया गया है। खाली स्थानो को फूल पत्ती फव्वारो (चारबाग शैली) से सजाया गया है। चर्चा मिलती है कि शाहजहां भवन बनाने से पूर्व अपने वास्तुकारो के साथ घंटो चर्चा करता था ताज महल के मूल निर्माण के पूर्व लकड़ी का ताज बनाकर उस पर चर्चा की गयी।

2. शाहजहाँ कालीन इमारतों में लालबलुआ पत्थर, संगमरमर ईट चूना सुर्खी गारा आदि का प्रयोग किया गया है पिछले शासकों की अपेक्षा इस काल में संगमरमर का प्रयोग अधिक किया गया है।

3. इस काल मे गुम्बद एवं मेहराब अत्यन्त वैज्ञानिक एवं खूबसूरत ढंग से बने है। उसके काल मे गुम्बद दोहरे गुम्बद कंदाकार आकृति एवं सुडौल रूप लिए हुए है। पूर्वकाल मे बने गुम्बदो मे ये अत्यन्त खूबसूरत है।

4. शाहजहां के समय बने मेहराब काफी खूबसूरत कोणदार तथा घुमावदार आकृति में एवं रंगीन टाइल्सों का प्रयोग करते हुए बने है।

5. शाहजहाँ के काल में बने मस्जिदो एवं मिनारो का रूप काफी भव्य है पिछले किसी भी काल में ऐसे मस्जिद एवं मीनार नही बने।

6. शाहजहां काल में अलंकरण पक्ष भी सभी मुगल इमारतों से अत्यन्त बेहतर है। भवनों को अलंकृत करने एवं सजाने के लिए चारबाग शैली, पिट्राड्यूरा एवं कीमती रंगीन पत्थर। टाइल्सो का प्रयोग किया गया है।

7. शाहजहां कालीन इमारतें भव्यता एवं खूबसूरती दोनो बिंदुओ पर सभी मुगल भवनों में सर्वोत्कृष्ट है।

औरंगजेब – औरंगजेब को कलाओं के प्रति रूचि बहुत कम थी। फिर भी उसके समय कई भवनों का निर्माण हुआ जैसे-

- मोती मास्जिद (लाल किला के भीतर)
- बादशाही मस्जिद (लाहौर)
- रबिया-उद-दुर्रानी। बीवी का मकबरा (औरंगाबाद), यह काले पत्थरो से बना है। ताजमहल के नकल की कोशिश की गयी है लेकिन सही नही बन पाया है।

सल्तनत कालीन वास्तुकला एवं मुगल वास्तुकला में तुलना

समानता के बिंदु

1. दोनो कालो में स्थापत्य के अनेक रूप रंगों - मास्जिद, मीनार, मकबरा मेहराब गुम्बद एवं किलों का निर्माण किया गया है।
2. भवन निर्माण के तहत दोनो काल खण्डो में सुर्खी एवं चूना ईट व पत्थरो का प्रयोग किया गया है।
3. दोनो इण्डो इस्लामिक स्थापत्य शैली के उदाहरण है। छत डालने के लिए दोनो कालो में गुम्बद एवं मेहराब (मुस्लिम परम्परा की त्रिज्याकार छत प्रणाली) तथा शहतीर एव बीम (हिंदू परंपरा की सपाट छत प्रणाली) का समन्वय किया गया है।
4. अलंकरण के लिए ज्यामीतिय डिजाइनो, पत्थर की सुन्दर जालियो नक्काशी ( ) का प्रयोग किया गया है।

असमानता / अंतर के बिन्दू

सल्तनत	मुगल
1. सल्तनत के तहत बने भवनों में अधिकांशतः लाल बलुआ पत्थरों का प्रयोग किया गया है। संगमरमर का प्रयोग कम है।	1. संगमरमर के प्रयोग पर अधिक जोर दिया गया है। साथ ही लाल बलुआ पत्थरों का प्रयोग भी है।

2. मेहराब एवं गुम्बद साधारण प्रकार के है। दोहरे गुम्बद का प्रयोग केवल मौदियों के काल में किया गया है।	2. मेहराब एवं गुम्बद अत्यन्त खूबसूरत एवं भव्य है। ये कोणदार एवं घुमावदार ढंग से बने है। गुम्बद दोहरा एवं केशाकार आकृति मे काफी भव्य है।
3. सजावट के लिए चारबाग शैली एवं पिट्राड्यूरा का प्रयोग नही किया जाता था।	3. चारबाग शैली एवं पिट्राड्यूरा के तहत सजावट मुगलकालीन विशेष है।
4. सल्तनत कालीन इमारते आकृति एवं अनुपात मे छोटी है। इनकी सजावट भी उत्कृष्ट नही है। इनके निर्माण के पिछे राजत्व का दृष्टिकोण नही था।	4. मुगल इमारते काफी भव्य विशाल एवं खुबसूरत है। इनके निर्माण के पीछे राजत्व के सिद्धान्त का प्रभाव था मुगल शासक राजत्व को विशेष दर्जा देते थे शासन एवं वैभव मे अत्यन्त विश्वास करते थे जिसे उन्होने इमारतों मे उतारने की कोशिश की है।

Q. मुगल स्थापत्य के विशेषताओं का निरूपण कीजिए।

Q. अकबर कालीन स्थापत्य कला की विवेचना कीजिए।

Q. शाहजहां का काल स्थापत्य कला का स्वर्णकाल क्यो कहा जाता है ? तर्क प्रस्तुत कीजिए।

Q. मुगल स्थापत्य कला मध्यकालीन कलाओ मे अद्वितीय स्थान रखता है विश्लेषण कीजिए।

Q. सल्तनत कालीन वास्तुकला एवं मुगल वास्तुकला मे तुलना कीजिए।

औपनिवेशिक स्थापत्य कला

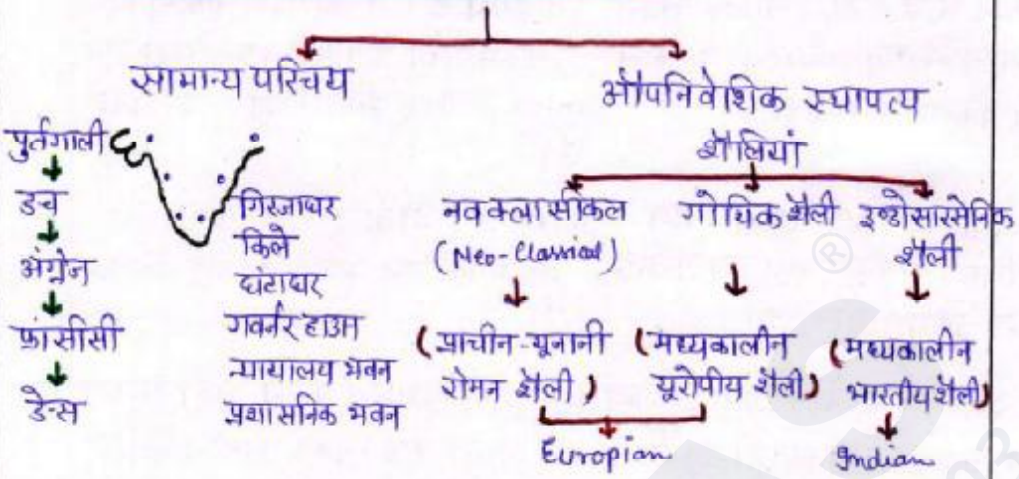

आधुनिक काल में यूरोप की अनेक वाणिज्यिक कम्पनियों का कालक्रम मे भारत आगमन हुआ इनमे से अंग्रेजो ने भारत का विजय कर अपना राज्य स्थापित किया।

अंग्रेजो सहित अन्य यूरोपीयों ने भारत में विभिन्न स्थापत्य संरचनाओं का निर्माण कराया। जिसके तहत अनेक गिरजाघर प्रशासनिक भवन (गवर्नर हाऊस न्यायालयीय भवन विधान परिषदे) किले घंटाघर विश्वविद्यालय महाविद्यालय आदि मुख्य थे। भारत के विभिन्न शहरो मे आज भी ये संरचनाए अस्तित्वमान है।

• औपनिवेशिक स्थापत्य शैलियां

औपनिवेशिक काल में मुख्यतः तीन शैलियो के तहत स्थापत्य संरचनाओ का निर्माण हुआ जैसे-

Neo-Classical -

यह मूलतः प्राचीन रोमन-यूनानी शैली है। पुनर्जागरण काल के यूरोप में इसे पुनर्जिवित किया गया। यूरोपीय जब भारत आये तब उसके तहत अनेक संरचनाओं का निर्माण हुआ।

ध्येय IAS most trusted since 2003

प्रश्न संख्या Question No.

इस भाग में कुछ न लिखें (Dont write anything in this margin)

इस शैली के तहत बने भवनो को काफी ऊँचे चबूतरे पर बनाया जाता था। जिस पर चढ़ने के लिए बहुसंख्यक सीढ़ियाँ बनी होती है। मुख्य भवन के सामने अनेक स्तंभो का प्रयोग किया जाता है तथा स्तंभो के पीछे रेखागणितिय संरचनाओं का निर्माण करते हुए छत ढ़ाला जाता है।

इस शैली के तहत बने भवनो में एशियाटिक सोसायटी टाऊन हाल (बाम्बे) तथा एलिफिस्टन सर्किल आदि मुख्य है।

गोथिक शैली

यह मुख्यतः मध्यकालीन यूरोपीय शैली है जिसे 19वीं शताब्दी में पुनर्जीवित किया गया। इस शैली के तहत भारत में भी अनेक इमारतो का निर्माण किया गया।

गोथिक शैली की मुख्य विशेषता ऊंची उठती छते नोकदार मेहराब बारीक साज सज्जा एवं विशालता है। भारत मे इसके तहत विशेष रूप से गिरजाघरों, घंटाघर, विश्वविद्यालय रेलवे स्टेशन आदि बनाये गये है। बम्बई का सचिवालय तथा विक्टोरिया टर्मिनस (छत्रपति शिवाजी टर्मिनस) आदि मुख्य है।

इण्डो सारसेनिक शैली

यह मुख्यतः मध्यकालीन भारतीय शैली है अंग्रेजो ने स्थापत्य कला में मध्यकालीन शैली का भी प्रयोग किया इसके माध्यम से वे यह दिखलाना चाहते थे कि मुस्लिम शासन के बाद वे इस देश के स्वाभाविक शासक है।

इस शैली के भवनों मे गुम्बद एवं मेहराब आधारित त्रिज्याकार छत प्रणाली का प्रयोग किया गया है। पत्थर की जालियों तथा मध्यकालीन नक्काशी की सजावट के लिए प्रयोग किया गया है। इसके तहत मद्रास लॉ कोर्ट के भवन मुख्य है।

Dhyeya IAS Now on Telegram

Join Dhyeya IAS Telegram Channel from link the given below

https://t.me/dhyeya_ias_study_material

नोट : पहले अपने फ़ोन में टेलीग्राम App Play Store से Install कर ले उसके बाद लिंक में क्लिक करें जिससे सीधे आप हमारे चैनल में पहुँच जायेंगे।

You can also join Telegram Channel through our website

www.dhyeyaias.com

www.dhyeyaias.in

ध्येय IAS
most trusted since 2003

Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter
(ध्येय IAS ई-मेल न्यूजलेटर सब्स्क्राइब करें)

जो विद्यार्थी ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप (Whatsapp Group) से जुड़े हुये हैं और उनको दैनिक अध्ययन सामग्री प्राप्त होने में समस्या हो रही है | तो आप हमारेईमेल लिंक Subscribe कर ले इससे आपको प्रतिदिन अध्ययन सामग्री का लिंक मेल में प्राप्त होता रहेगा | **ईमेल से Subscribe करने के बाद मेल में प्राप्त लिंक को क्लिक करके पुष्टि (Verify) जरूर करें अन्यथा आपको प्रतिदिन मेल में अध्ययन सामग्री प्राप्त नहीं होगी |**

नोट (Note): अगर आपको हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यम में अध्ययन सामग्री प्राप्त करनी है, तो आपको दोनों में अपनी ईमेल से Subscribe करना पड़ेगा | आप दोनों माध्यम के लिए एक ही ईमेल से जुड़ सकते हैं |

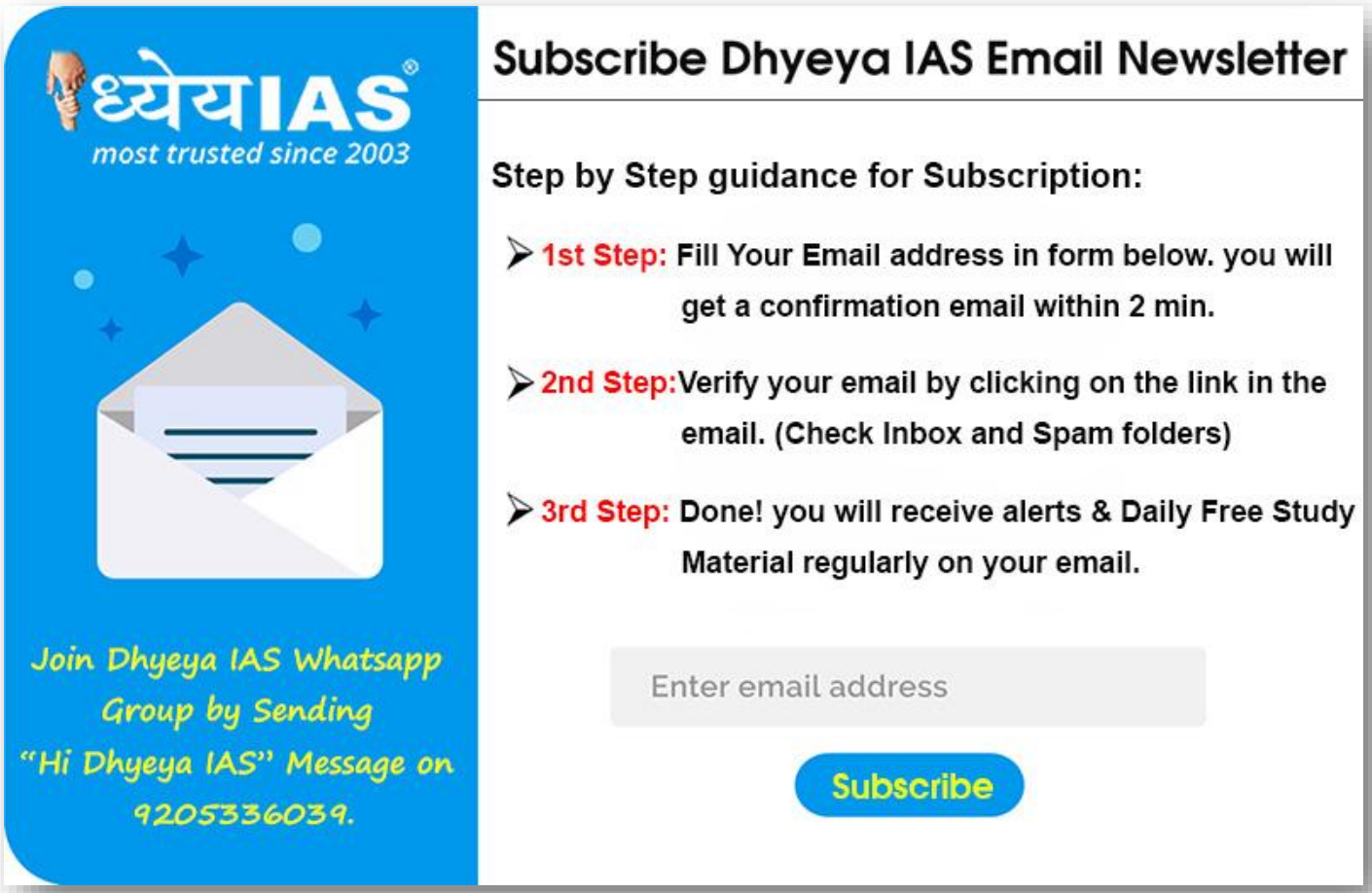

ध्येय IAS
most trusted since 2003
Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

ध्येय IAS अब व्हाट्सएप पर
Dhyeya IAS Now on Whatsapp

ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप से जुडने के लिए 9355174442 पर "Hi Dhyeya IAS" लिख कर मैसेज करें

नोट: अगर आपने हमारा Whatsapp नंबर अपने Contact List में Save नहीं किया तो आपको प्रीतिदिन के मैटेरियल की लिंक प्राप्त नहीं होंगी इसलिए नंबर को Save जरूर करें।

आप हमारी वेबसाइट के माध्यम से भी जुड सकते हैं

www.dhyeyaias.com
www.dhyeyaias.in

ध्येय IAS
most trusted since 2003

Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400